अभिभावक की बात

सेल्वी राजेन्द्रन

जब परीक्षा का समय होता है तो मैं अपने बच्चों से भी ज्यादा चिन्तित रहती हूँ। बड़ी लड़की खासतौर पर बहुत अधिक तनावग्रस्त रहती है क्योंकि उसे गणित के कुछ सवाल कठिन लगते हैं और मुझे लगता है कि वह सीखने पर उतना ध्यान नहीं देती। इसके अलावा, छोटी कक्षाओं में उसकी जो शिक्षिका थीं वे बहुत सख्त थीं। वे चिल्लाया करती थीं जिससे उसके भीतर डर बैठ गया है। अब जब मैंने स्कूल बदल दिया है, मुझे लगता है कि वह अपनी परीक्षाओं में बहुत अच्छा करेगी।

चूँकि मैं कक्षा 12 तक पढ़ी हूँ, इसलिए मैं उसकी मदद कर पाती हूँ। पर सिर्फ कुछ हद तक, क्योंकि तब से अब तक पढ़ाई बहुत बदल चुकी है और वैसे भी मुझे घर का बहुत काम रहता है। मैं अपने दोनों ही बच्चों को गणित और अँग्रेजी पढ़ने के लिए घर के पास ट्यूशन के लिए भेजती हूँ। मैं चाहती हूँ कि वे बहुत अच्छी अँग्रेजी सीखें - वही एक रास्ता है जिससे कि वे वाकई में प्रगति कर सकते हैं। मुझे लगता है कि अच्छी अँग्रेजी सीखना परीक्षाओं में अच्छा करने के लिए जरूरी होता है।

मुझे नहीं लगता कि उनके शिक्षक बहुत सख्त हैं - यदि बच्चे किसी टैस्ट या परीक्षा में अच्छा नहीं करते, तो वर्तमान स्कूल में उन्हें कोई सजा नहीं दी जाती। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि उन्हें इस बात पर जोर देना चाहिए कि बच्चे कड़ी मेहनत करें, बच्चे घर पर किसी की नहीं सुनते; शिक्षक ही सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है।

स्कूल उनके बर्ताव पर टिप्पणी करता है और वहाँ उनके कक्षाकार्य और गृहकार्य की जाँच भी की जाती है। मुझे लगता है कि स्कूल वालों को और सख्त होना चाहिए। स्कूल में तिमाही, छह माही और वार्षिक परीक्षाएँ होती हैं और साथ ही टैस्ट भी होते हैं। मेरी छोटी बेटी की कक्षा चार में मौखिक टैस्ट ज्यादा होते हैं। वह बोलने में बहुत अच्छी है, उसके भीतर बहुत आत्मविश्वास है इसलिए वह बहुत अच्छा कर रही है। उसकी भी परीक्षाएँ होती हैं, पर वह उनसे तनिक भी नहीं घबराती।

एक चीज जो मेरे ध्यान में आती है वह यह कि मेरी बच्चियाँ हमेशा ही स्कूल से सम्बद्ध किसी न किसी काम में व्यस्त रहती हैं और इसके लिए हमें तकरीबन रोज ही कुछ न कुछ खरीदना पड़ता है।

मैं चाहती हूँ कि वे दोनों आगे कॉलेज जाएँ और काम भी करें - इसलिए बाद में मैं उन्हें किन्हीं भी अतिरिक्त कक्षाओं में भेजने के लिए राजी हूँ। यह जरूरी है कि वे अच्छा करें, मेहनत से पढ़ाई करें और परीक्षाओं में सफल हों। मैंने गाँव के अपने स्कूल में बहुत मेहनत करके बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की थी। जब स्कूल वालों को मेरे बच्चों के बारे में कुछ बताना होता है तब वे मुझे बुलावा भेजते हैं।

कुल मिलाकर, मैं इस व्यवस्था से सन्तुष्ट हूँ।

__सेल्वी राजेन्द्रन__ महिला समूहों में बेहद सक्रिय हैं और अपने बच्चों की शिक्षा और विकास में सक्रिय रूप से रुचि लेती हैं। ***अनुवादः*** *भरत त्रिपाठी*